B.A. III Yr.

शब्द को स्वरूप निर्धारण और अभिधा शक्ति की विवेचना करें

शब्द व्यवहार का सम्यग् माध्यम है। सशक्त विवेचना के लिए शब्द का स्वरूप जानना अत्यावश्यक है। आचार्य पतंजलि ने अपने 'महाभाष्य' में शब्द की व्याख्या करते हुए कहा - 'येन कस्यचित् संप्रत्ययो भवति स शब्दः' अर्थात् जिसके द्वारा किसी की सम्यक् प्रतीति हो, उसे शब्द कहते हैं।

ऋग्वेद में तो शब्द को ही ब्रह्म कहते हैं और ब्रह्म तक इसकी उपस्थिति मानते हैं - 'यावत् ब्रह्म विष्ठितं तावत् वाक्' - (ऋग्वेद)

भर्तृहरि ने भी अपने वाक्यपदीय में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि 'अर्थ' की अभिव्यक्ति शब्द से ही संभव है - 'न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते। अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते।'

पतंजलि ने 'सम्यक् प्रतीति' कहकर सार्थक ध्वनि-समूह ही शब्द कहलाते हैं - प्रतीत पदार्थको लोके ध्वनिः शब्द इत्युच्यते - बतलाया।

शब्दों या पदों के अलग-अलग सार्थक रहने पर भी उनका एक सम्पूर्ण अर्थ नहीं निकलता, एक अर्थ के प्रतिपादन के लिए क्रम से व्यवस्थापित पद-समूह वाक्य कहलाता है अर्थात् आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि के द्वारा वे परस्पर अन्वित होते रहते हैं।

शब्द तीन प्रकार के होते हैं - वाचक, लाक्षणिक और व्यंजक। 'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा' (काव्य प्रकाश - मम्मट)

मीमांसकों, नैयायिकों एवं वैयाकरणों आदि ने शब्द शक्ति पर बहुत अधिक विचार किया है। कुछ विद्वानों ने शब्द की दो शक्तियों अभिधा और लक्षणा को ही

Scanned with CamScanner

स्वीकार किया है, जबकि, ध्वनिवादी आचार्यों ने व्यञ्जना को भी पर्याप्त महत्त्व दिया है। कुछ आचार्य 'तात्पर्य वृत्ति' शब्द की एक अन्य शक्ति को भी स्वीकार करते हैं।

शब्दों से प्रकट होने वाला अर्थ भी वाच्य, लक्ष्य और व्यङ्ग्य क्रम से तीन प्रकार का होता है। साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार - 'तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिम अभिधा'

आचार्य मम्मट के अनुसार - 'साक्षात् संकेतितं योऽर्थम- -भिधत्ते स वाचकः' - जो शब्द साक्षात् संकेतित अर्थ को बतलाता है, वह वाचक कहा जाता है। 'इस शब्द का यही अर्थ समझा जाय' इस प्रकार शब्द की स्वाभाविक शक्ति तथा व्याकरण आदि के द्वारा जो निर्धारित होता है, शब्द की उसी शक्ति को अभिधा कहा जाता है। इस शक्ति से जिस अर्थ की प्रतीति होती है, वह वाच्यार्थ कहलाता है। सीधे ढंग से अर्थ का बोधक होने के कारण इसे मुख्यार्थ भी कहा जाता है।

पतंजलि महाभाष्य में कहते हैं - 'अथ गौरित्यत्र कः शब्दः? येन सास्नालांगूलककुद खुर विषाणिनां सं प्रत्ययो भवति' अर्थात् 'गो' शब्द का क्या अर्थ है? सास्ना पूंछ ककुद खुर और सींग युग जिस चतुष्पद प्राणी का बोध होता है।

शब्द की अर्थ प्रतीति प्रस्तुत आठ साधनों में किसी से भी हो सकती है -

'शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान, कोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः
सिद्धपदस्य वृद्धाः।' (मुक्तावली)

Contd.